International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182 Print ISSN: 2349-5979
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2016; Page No. 244-245

पश्चिमी मध्यप्रदेश के जनजातीय जिलों में जनजातियों की समस्याएँ एवं सुझाव

[1] डॉ. जी.सी. खिमेसरा [2] श्री नोंदराम मालवीय

[1] प्राचार्य, शासकीय स्ना. महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.)

[2] शोधार्थी, शासकीय स्ना. महाविद्यालय, मंदसौर (म.प्र.)

सारांश – देश का सर्वांगीण विकास तब तक सम्भव नहीं है जब तक उसमें रहने वाले प्रत्येक नागरिक पूर्ण सहयोग प्रदान न करें। आजादी के 68 वर्ष होने के बावजूद जनजातीय समुदाय के विकास में कमियाँ रही हैं। संविधान के मौलिक अधिकार और समानता के सिद्धांतों ने स्थिति को स्पष्ट किया है। भारत में एक नगरीय जीवन की चकाचौंध हैं तो दूसरी ओर जनजातीय समुदाय का वह भाग जो समाज की मुख्य धारा से अछूता है जिसकी अपनी कोई पहचान नहीं है, और न ही अधिक स्वतंत्रता है। आज जनजातीय समुदाय विकास की हौड़ में पीछे रह गया है। इस समुदाय का शैक्षिक, आर्थिक तथा स्वास्थ्य संबंधी स्तर पिछड़ा है।

शब्द कोष– जनजातीय, हौड़, परंपराएँ, संस्कृति, सभ्यताएँ, ऐतिहासिक विकास

उद्देश्य – भारत आर्थिक विकास के पथ पर तेज गति सक बढ़ रहा है। जनजातीय वर्ग जो हजारों वर्ष पुरानी अपनी परंपराओं के साथ जीवन यापन करते हैं, उनका सामाजिक एवं आर्थिक विकास नहीं हो पाया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य निम्न तथ्यों को स्पष्ट करना है–

1. अध्ययन क्षेत्र की भौतिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य का अध्ययन करना।
2. पश्चिमी मध्यप्रदेश में निवासित जनजातीयों में व्याप्त बुराईयो का अध्ययन करना।
3. जनजातियों के विकास में संगठनों की भूमिका का अध्ययन करना जिससे उनकी संस्कृति का संरक्षण किया जा सके।
4. जनजातियों के सामाजिक एवं आर्थिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं एंव सुझावों का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि – पश्चिमी मध्यप्रदेश मालवा संस्कृति का एक अभिन्न भाग है। प्रस्तुत शोध पत्र में जनजातीय बाहुल्य जिले में जनजातियों के अध्ययन हेतु द्वितीयक समंको एवं प्रकाशित जनगणना पुस्तिकाओं का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त शासन एवं प्रशासन तथा विभिन्न विभागों द्वारा जारी सूचनाएँ, वार्षिक रिपोर्ट आदि समंको का प्रस्तुत शोध पत्र में प्रयोग किया गया है।

प्रस्तावना – सामान्यतया यह धारण है कि जंगलों में निवासित और आधुनिक युग में भी प्राकृतिक माहौल में प्रकृति के साथ जीवन यापन करते हैं, वे सभी जनजातीयाँ हैं। परन्तु आधुनिक समाज में यह परिवर्तन शासकीय योजनाओं के माध्यम से जुड़ने की ललक तथा पूँजीवादी व्यवस्था के चलते जनजातीय वर्ग मुख्य धारा में पिछड़ा हुआ है। पश्चिमी मध्यप्रदेश के जनजातीय जिलों की राजनैतिक तथा प्रशासनिक व्यवस्था अन्य प्रगतिशील क्षेत्रों से भिन्न है। जनांकिकीय संरचना भौमिक संसाधनों से प्रभावित होती है, जिससे आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है।

परिचय – पश्चिमी मध्यप्रदेश मालवा संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। भौगोलिक दृष्टि से विन्ध्य और सतुपड़ा के मध्य में पश्चिमी मध्यप्रदेश का क्षेत्र आता है। पश्चिमी मध्यप्रदेश के उत्तर में विन्ध्याचल, दक्षिण में सतपुड़ा, पूर्व में छोटी तवा नदी तथा पश्चिम में धार और बड़वानी को लेकर इसकी सीमाएँ बनती है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध पत्र में पश्चिमी मध्यप्रदेश के जनजातीय जिलों में धार, झाबुआ, अलीराजपुर, बड़वानी एवं खरगौन जिले शामिल हैं।

जनजातीय जिलों का क्षेत्रफल एवं जनसंख्या की स्थिति

क्र.	जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी. में)	तहसील को संख्या	कुल जनसंख्या	जनजातियों की जनसंख्या	जनजातीय जनसंख्या का प्रतिशत
1	धार	8153	8	2154672	1222814	56.75
2	झाबुआ	6778	5	1024091	891818	87.08
3	अलीराजपुर	3182	3	728677	648523	89.00
4	बड़वानी	5822	5	1385659	962145	69.43
5	खरगोन	8030	9	1872413	730169	38.99

स्त्रोत–भारत की जनगणना 2011, श्रृंखला–24 से।

सामान्यतः किसी भी क्षेत्र में जनांकिकीय संरचना का सामाजिक और आर्थिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। जनजातीय अध्ययनों में सबसे महत्वपूर्ण विषय वन्य जातीय समस्याओं का विवेचन है, क्योकि यह समाज अपनी विशिष्ट संस्कृति, समाज व्यवस्था, धर्म और धार्मिक अन्ध विश्वासों तथा आर्थिक संरचनाओं के कारण आधुनिक समाज से काफी पिछड़ा हुआ है। अध्ययन में देखा गया हैं कि जनजातीय समुदाय आज भी नगरीय और ग्रामीण समाज से दूर रहकर स्वतंत्र और एकांत जीवन व्यतीत कर रहा है। कहीं–कहीं तो यह इतने दुर्गम स्थानों पर निवास कर रहे हैं कि उसमें सीधे–सीधे सम्पर्क स्थापित नहीं किया जा सकता है। किसी न किसी पहाड़ी की ढलान पर

झोपड़ी बनाकर रह रहे हैं। यहाँ यातायात एवं आधुनिक सुख सुविधाओं का अभाव पाया जाता है। इन जातियों के पास प्राथमिक सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं ऐसे में आधुनिक सुविधाओं को पहुँचाना कल्पना मात्र है। इनके निराशावादी दृष्टिकोण और अपने विशिष्ट जीवनक्रम से चिपके रहने की भावनाओं के कारण कई प्रकार की समस्याओं को जन्म देती हैं। जो इस प्रकार है–

1. **आर्थिक समस्या** – क्षेत्र के अधिकांश परिवार आर्थिक दृष्टि से इतने कमजोर हैं कि रोटी और कपड़े तथा आवास जैसी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं कर पाते हैं। खेती समुदाय के लिये जीविका का मुख्य आधार है। अर्थोपार्जन के इन साधनों के रूप में समुदाय के पास खेती योग्य भूमि का अभाव होने के साथ ही पर्याप्त मात्रा में पशुधन नहीं है। दैनिक मजदूरी भी कम प्राप्त होती है। कृषि उपकरण में पूर्वजों द्वारा दिये गये उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। सट्टा शराब की प्रवृत्ति इनके जीवन के लिये घातक सिद्ध हो रही है। मजदूरों को पुनः रोजगार न देने का भय दिखाकर कम वेतन दिया जाता है। महाजनों और साहुकारों द्वारा दिये गये धन पर दुगने–तिगुने दामों के नाम पर फसल या भूमि हड़प ली जाती है। वस्तुतः इन जिलों में जनजातीयों का आर्थिक जीवन बहुत दयनीय है।
2. **सामाजिक समस्या** – निरक्षरता इनके लिये एक मुख्य समस्या बनकर उभरी है। अशिक्षा के चलते यह सदैव सभ्य समाज द्वारा उपेक्षित होते रहे है। अध्ययन क्षेत्र की मुख्य जनजाति भील में लड़की का मूल्य चुकाना अनिवार्य है। इस मूल्य को चुकाने मे सामाजिक अपराधों की एक नई श्रंखला का जन्म होना प्रारंभ हो जाता है। विभिन्न व्यसनों का शिकार होकर युवक पिता की भूमिका निभाने में अयोग्य सिद्ध होता है। वर्तमान संदर्भ में जनजातीय जीवन में अशिक्षा, जनसंख्या वृद्धि, अन्ध विश्वास, ऋणग्रस्तता, पौष्टिक आहार और आवास संबंधी समस्याएँ देखी जा रही हैं। यही कारण हैं कि उनके जीवन स्तर में सुधार की तीव्रता अनुभव नहीं की जाती है।
3. **सामाजिक समस्याएँ**– किसी भी समाज विशेष के पारम्परिक विधि–विधानों में जब परिस्थितियों का हस्तक्षेप होने लगता है अथवा भौतिक पर्यावरण का दूषित प्रभाव उस पर पड़ने लगता है, तब वह समाज अपने मूल परिवेश को त्यागकर नवीनता को ग्रहण करने की ओर बढ़ने लगता है। यही वैचारिक परिवर्तन किसी समाज विशेष के सांस्कृतिक वैभव के लिये घातक सिद्ध होता है। पश्चिमी मध्यप्रदेश की ये जनजातियाँ अपनी संस्कृति की गरिमा के कारण भारत में अलग से पहचानी जाती हैं। भगोरिया पर्व, इन्दल उत्सव, वैवाहिक विधि, धर्म उत्सव आदि उनके पूर्वजों के द्वारा दिये गये मुख्य सांस्कृतिक धरोहर हैं। किन्तु विगत एक दशक से इनमें अपनी ही संस्कृति को नष्ट करने की प्रक्रियाएँ देखी जाने लगी हैं। जो निम्न है–

1. जनजातियाँ अपनी मूल भाषा को भूलने लगी हैं।
2. बच्चों को शिक्षित करने के लिये छात्रावासों में दाखिल किया जाता है। जहाँ बच्चों को धर्म परिवर्तन की ओर अग्रसर किया जाता है और अपना मूल धर्म भूल जाते हैं।
3. अंध विश्वास एवं रूढ़ीवादिता के कारण ये अपना आवास बदल देते हैं जिससे जीवन स्थायित्व नहीं आ पाता है।
4. इन समस्याओं के अतिरिक्त स्त्री समस्या, बाल समस्या, कुपोषण, अंधविश्वास, शिक्षा की समस्या, स्वास्थ्य एवं अपराध जैसी समस्या इनमे अधिक है।

सुझाव – जनजातियाँ आदि काल से वनों में प्रकृतिक के साथ सामंजस्य बनाकर निवास करती आ रही है। आधुनिक सभ्यता के सम्पर्क के कारण इनमें परिवर्तन आने लगा है। यह परिवर्तन इनके जीवन में हर क्षेत्र में आया है। जनजातियों की इन समस्याओं के निराकरण के लिये निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं –

1. **आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु सुझाव** – आर्थिक विपन्नता को दूर करने के लिये, शीघ्र ही शासन और समाज सेवी संस्थाओं को ठोस कदम उठाना चाहिये। राहत कानून बनाकर उन्हें और अधिक विकसित होने का मौका दिया जाये। ऐसे जनजातीय परिवार जिनके पास भूमि नही हैं उनको भूमि वितरित की जाये। सिंचाई साधनों को बढाया जाये। जनजातीय क्षेत्रों में उद्योगों का निर्माण कर रोजगार का सृजन किया जाये। महाजनो एवं साहुकारों के ऋण से मुक्त करने का अभियान चलाकर जागृत किया जाये। जनजातियों के प्रति आम लोगों के दृष्टिकोण में बदलाव लाना आवश्यक है।
2. **सामाजिक स्थिति में सुधार हेतु सुझाव** – सामाजिक जीवन की विसंगतियों को दूर करने के लिये शिक्षा अनिवार्य की जाये। शराब तथा अपराधी प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने वाली वस्तुओं के सेवन पर रोक लगा दी जाये जिसे खर्चा कम होगा एवं अपराध भी कम होगें। कम उम्र में परम्पराओं के नाम पर होने वाले विवाह को बंद किया जान चाहिये तथा ऐसे विवाह को गैर कानूनी घोषित किया जाये। सामाजिक सुधार हेतु समितियों का गठन किया जाये तथ समाज के शिक्षित युवा वर्ग को इसका दायित्व सौंपा जाये।
3. **सांस्कृतिक स्थिति में सुधार हेतु सुझाव** – जनजातियों की संस्कृति को बचाने के लिये व्यापक प्रयास की आवश्यकता है। जनजातियों की भाषा में शिक्षा दी जाये तथा उसका शासन द्वारा प्रचार प्रसार किया जाये। लोक कलाओं को पुनर्जीवन प्रदान कर उनका संरक्षण करना चाहिये। पारंपरिक उत्सवों को संरक्षित किया जाये। जनजातियों में होने वाले धर्म परिवर्तन पर शासन को अंकुश लगाना चाहिये। जनजातियों के विकास एवं उत्थान के लिय हो रहे अनुसंधानों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाये तथा उत्कष्ट शोध कार्य को पुरूस्कृत भी किया जाये।यह विडम्बना हैं कि प्रकृति की गर्भ में पुरातन से पलने वाली जनजातीय सभ्यताएँ आज नष्ट होने के कगार पर पहुँच गयी है। जनजातियों की परंपराएँ एवं संस्कृतियाँ हमें इतिहास की याद दिलाती है। इन जनजातीय समाजों का विकास होना आवश्यक हैं किन्तु विकास के चक्कर में अतीत के गौरव पलों को इन जनजातियों से अलग नहीं किया जा सकता है। विकास इनके इतिहास को नष्ट करके नहीं किया जा सकता है। अतः आवश्यक हैं की इन सुझावों के साथ–साथ हमें व्यक्तिगत प्रयास भी कर इनको बचाना होगा।

संदर्भ सूची–

1. चांदना, आर. सी., ''जनसंख्या भूगोल'', कल्याणकारी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. 77
2. वर्मा, एम. एल.,''भीलों की सामामजिक व्यवस्था'', क्लासीकल पब्लि., 1992, पृ. क्र. 26–37
3. Indian Government, Sample Registration Berlletin. New Delhi. XVIII(1).
4. मध्यप्रदेश गजिटीयर, 1993